# भारत में इस्लाम के प्रसार शासक वर्ग की भूमिका

चरण सिंह
जे.बी.टी. अध्यापक
गॉव व डा.काब्रच्छा
तहसील उचाना (जीन्द)

**सारांश**

जब तक भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना नहीं हो पायी थी तब तक पीरों और फकीरों द्वारा शांतिपूर्वक इस्लाम का प्रचार होता रहा। किन्तु, जब मुहम्मद गोरी ने भारत को विजित करके अपने प्रतिनिधि शासक के रूप में कुतुबुद्दीन ऐबक को नियुक्त किया तो भारतीय इतिहास ने भी एक करवट ली। मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद जब कुतुबुद्दीन ऐबक शासक बना तो भारत में एक नये शासक वंश की नींव पड़ गयी।

***मुख्य शब्द :*** *इस्लाम, इतिहास, अनुयायी, धार्मिक, प्रसार–प्रचार, परिवर्तन*

**प्रस्तावना**

मुस्लिम सत्ता की स्थापना के बाद इस्लाम धर्म के प्रसार और प्रचार के लिए अब तक जो शांतिपूर्ण तरीके अपनाये गये उनमें भी परिवर्तन हुआ और भारतीय जनता को इस्लाम का अनुयायी बनाने के लिए मुस्लिम शासकों ने बल प्रयोग करना शुरू कर दिया। भारत में इस्लाम का प्रचार अधिकांश इस्लाम के सिद्धान्तों की सरलता के कारण न होकर उसके राजधर्म होने के कारण तथा तलवार के बल पर फैलाये जाने के कारण हुआ।[1] भारत में मुसलमान राज्य धार्मिक राज्य ही बना रहा।[2]

मुसलमानों के अतिरिक्त जातियों पर राज्य की ओर से अनेक प्रतिबन्ध लगाये गये थे। बलात् धर्म परिवर्तन करने का आदेश भी राज्य की ओर से दिया गया था। लोगों को इस्लाम बनाने के लिए 'जजिया' कर लगाया गया। यह कर केवल गैर मुसलमानों को ही देना पड़ता था। हनीफी धर्मशास्त्रियों के अनुसार, मुसलमान भिन्न जातियों को अपने प्राणों की रक्षा के लिए जजिया देना पड़ता है।

कुछ विद्वानों का मत है कि जजिया कर राज्य की आय का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत था।[3] इसलिए मुस्लिम शासकों ने हिन्दूओं को धर्म परिवर्तनों के लिए विवश नहीं किया। क्योंकि इससे राज्य की आय कम हो जाती थी।[4]

सत्य जो कुछ भी हो यह निःसन्देह है कि यह केवल गैर मुसलमानों पर ही लगाया जाता था और यह हीनता का परिचायक था।[5] जजिया लगाने के उद्देश्य यही था कि जजिया के आर्थिक भार और

भेदभाव बर्ताव से अधिकांश हिन्दू किसी न किसी दिन इस्लाम स्वीकार कर ही लेंगे।[6] अनेक मुसलमान इतने धर्मान्ध थे कि वह नये मंदिरों का निर्माण और पुराने मंदिरों का मरम्मत नहीं होने देते थे।

इल्तुतमिश के राज्यकाल में उलेमाओं ने मिलकर मांग की थी कि हिन्दुओं को कुराने के आदेश के अनुसार इस्लाम या मृत्यु चुनने को कहा जाय।[7] अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में काजी मुगिसुद्दीन ने भी यह मांग की थी। उसने कहा था चूंकि हिन्दू पैगम्बर के कट्टर शत्रु हैं। इसलिए खुदा ने स्वयं हिन्दुओं का पूर्ण दमन करने के लिए आदेश दिया है। पैगम्बर ने कहा है वे या तो इस्लाम स्वीकार करें या नहीं तो उन्हें कत्ल कर दिया जाय।[8]

कुतुबुद्दीन मुबारकशाह के शासन का वर्णन करते हुए इब्बतूता ने लिखा है कि इस्लाम ग्रहण करने के इच्छुक करने के इच्छुक हिन्दू को सुल्तान के सामने उपस्थित किया जाता था और सुल्तान उसकी बहुमूल्य वस्त्र और कंकण प्रदान करता था।[9]

फिरोज तुगलक के शासनकाल में राज्य द्वारा धर्म परिवर्तन को प्रोत्साहन किया गया और लोगों को इस्लाम ग्रहण करने के लिए प्रलोभन दिया जाने लगा। सुल्तान के शब्दों से उसके विचारों की पुष्टि होती है, जो हिन्दू इस्लाम धर्म ग्रहण करेगा उसे जजिया कर से मुक्त कर दिया जायेगा। जनता के कानों में इसकी खबर पहुंची और बहुत बड़ी संख्या में हिन्दू उपस्थित हो गये और उनको इस्लाम ग्रहण करने का सम्मान प्रदान किया गया।[10]

विधर्मी प्रजाजनों को इस्लाम ग्रहण करने के लिये वह उत्साहित करता है जो इस्लाम ग्रहण कर लेते, उनको 'जजिया' कर से मुक्त कर देता था। एक ब्राह्मण को जिसने अपने पूर्वजों का धर्म त्यागना अस्वीकार कर दिया था, यह दोष लगाकर जीवित जलवा दिया कि वह मुसलमानों को सत्धर्म से विलग होने को प्रवृत्त करता है।[11]

फिरोज कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने अपने शासनकाल में मंछिरों को गिराया तथा विधर्मियों के नेताओं का वध किया जो दूसरों को भी बुराई की ओर घसीटते थे और इन मंदिरों के स्थान पर मस्जिद बनवाई।[12] केवल युद्ध या सैनिक अभियानों के समय ही नहीं बल्कि शांतिकाल में भी न्दिुओं के मंदिर गिरा दिये जाते थे और उनकी देव मूर्तियों के टुकड़े–टुकड़े कर दिये जाते थे।[13]

फिरोज की भांति सिकन्दर लोदी ने भी हिन्दुओं को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए प्रलोभन दिया। इनका मुख्य लक्ष्य यह था कि किसी भी तरह हिन्दुओं को इस्लाम का अनुयायी बनाया जाय और सभी प्रकार का दबाव डालकर मुसलमान बना लिया जाय।[14] ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है, "हिन्दुओं पर राज्य की ओर से इस्लाम लादा जाने लगा।[15]

मध्यकालीन मुसलमान शासक कभी–कभी हिन्दुओं को बड़ी संख्या में मुसलमान बना लेते थे। कश्मीर के बुतकिशन सिकन्दर ने हजारों हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया था और जिन्होंने अपना धर्म परिवर्तन नहीं किया उन्हें राज्य से निकाल दिया था।[16]

बंगाल के जलालुद्दीन (1414–1430 ई.) ने भी सैकड़ों हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बना लिया था और जो बाकी रहे थे उन पर खूब अत्याचार किये थे।[17]

इस प्रकार सल्तनत काल में मुस्लिम शासक बलपूर्वक इस्लाम स्वीकार कराने में नहीं हिचकिचाते थे। इसका कारण इस्लाम जो कुछ लोगों तक ही सीमित था शासकों के पदापाती दृष्टिकोण के कारण अधिक लोगों में फैला तथा भारत के विस्तृत भू–भाग में इसका प्रचार हुआ।

मुगल काल में बाबर और हुमाँयू में भी धार्मिक असहिष्णुता विद्यमान थी। लेकिन, सल्तनत कालीन शासकों की भाँति विशाल पैमाने पर नहीं। मुगल काल में अकबर एक धर्मसहिष्णु शासक था और उसने सभी धर्मावलम्बियों को अपने धर्म को मानने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की। वह विभिन्न धर्मों को एक ही लक्ष्य की ओर ले जाने वाले विभिन्न मार्ग मानने लगा।[18] वह इस परिणाम पर भी पहुंच गया था कि प्रत्येक धर्म के गहन और जनसुलभ अंग होते हैं।[19]

अकबर के धार्मिक सहिष्णुता की नीति थोड़े–बहुत परिवर्तनों के साथ औरंगजेब के काल तक चलती रही। जहांगीर और शाहजहाँ यद्यपि अकबर की भाँति धर्म–सहिष्णु नहीं थे फिर भी उनमें उतनी कट्टरता नहीं थी जितनी कि औरंगजेब में। जहांगीर के संबंध में रामप्रसाद त्रिपाठी का कहना है कि वह अपने पिता से अधिक इस्लाम परायण था और अपने पुत्र खुर्रम से कम। कट्टर मुस्लिमों को राजी रखने के लिये ही वह कभी–कभी अकबर द्वारा स्थापित और अपने से मान्य, सहिष्णुता के सिद्धान्तों से विचलित हो जाता था।[20]

दुर्भाग्यवश उसके शासन काल में अनजाने ही धार्मिक अनाचार के बीच एक बार फिर बोये गये।[21] एक उद्धारक दार्शनिक पिता और एक राजपूत रानी का पुत्र होते हुये भी वह इस्लाम धर्म को मानता था और उसने सिक्कों पर अकबर द्वारा हटाये गये धार्मिक सिद्धान्तों को फिर से जारी किया।[22]

शाहजहाँ के संबंध में बनारसी प्रसाद सक्सेना का कहना है कि सहिष्णुता से हटकर घड़ी की सुई असहिष्णुता की ओर मुड़ गयी थी।[23] सम्राट के आग्रह से हिन्दुओं को समझा–बुझाकर या जबरिया मुसलमान बनाने का क्रमिक प्रयास आरम्भ हुआ।[24] नौकरी एवं उपहरों का प्रलोभन देकर उनको धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया जाता था।[25] हिन्दुओं को अपने संबंधियों को मुसलमान बनने से रोकने की सख्त मनाही थी।

प्रिंगले केनेडी का कहना है, "जो अकबर ने प्राप्त किया था और जिसकी जहाँगीर और शाहजहाँ ने अपने अनेक दुर्गुणों के होते हुए भी रक्षा की थी, वह अर्थात् अपनी हिन्दू प्रजा का स्नेह औरंगजेब ने खो दिया। वह दार–उल–हरब (काफिर देश) को दार–उल–इस्लाम (सत्य धर्म का देश) बनाना चाहता था।[26] उसका उद्देश्य यह था कि हिन्दू बाध्य होकर इस्लाम स्वीकार कर लें और इस प्रकार भारत एक इस्लामी राज्य बन जाए।[27]

## निष्कर्ष

इस प्रकार शासकों के सहयोग से भारत में इस्लाम फूलता और फलता रहा। राजकीय संरक्षण प्राप्त होने के कारण इस्लाम का विकास संभव हो सका। फिर भी ये कहना समीचीन प्रतीत होता है कि इतने प्रयासों के बावजूद भी इस्लाम धर्म में भारत के अधिसंख्य हिन्दुओं ने स्वीकार नहीं किया, बल्कि उनके अन्दर विद्वेष की भावना की वृद्धि ही हुई।

असहनीय कष्टों को सहकर भी भारत की हिन्दू जनता अपने धर्म के प्रति आस्थावान बनी रही। यह उसके धैर्य और सहनशीलता का सर्वोत्तम उदाहरण कहा जा सकता है।

## संदर्भ सूची


1. ईश्वरी प्रसाद, भारतीय मध्ययुग का इतिहास, पृ. 504–5
2. वही,पृ. 506
3. ए. युसूफ अली, मेडीवल इण्डिया सोशल एण्ड इकोनामिक कण्डीशन, लंदन, 1932, पृ. 230
4. के.एस. लाल, हिस्ट्री आफ खल्जीज, इलाहाबाद, 1960, पृ. 250
5. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 38
6. वही,पृ. 38
7. वही, पृ. 36
8. वही, पृ. 37
9. इब्नबतूता, पेरिस संस्करण 3, पृ. 197–98
10. ईश्वरी प्रसाद, मध्ययुग का इतिहास, पृ. 290
11. शम्से सिराज अफीफ, तारीख–ए–फिरोजशाही, कलकत्ता, 1888–90, पृ. 379

12. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 38

13. वही, पृ. 38

14. वही, पृ. 40

15. मध्ययुग का इतिहास, पृ. 476

16. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 41

17. वही, पृ. 41

18. वही, पृ. 42

19. रामप्रसाद त्रिपाठी, मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन, इलाहाबाद, 1956, पृ. 22

20. वही, पृ. 323

21. वही, पृ. 323

22. वही, पृ. 233

23. बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ ऑफ देहली, इलाहाबाद, 1932, पृ. 312

24. वही, पृ. 312

25. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति पृ. 313

26. श्रीराम शर्मा, भारत में मुगल साम्राज्य, काशी, सं. 2021 वि., पृ. 592

27. आशीर्वाद लाल श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति,पृ. 44